काश! मैं लडकी होता

—NAVEENMADHU

काश! मैं लडकी होता,
लडकों का उन्माद बन जाता,
दुनिया के सब सुख पाता,
काश ! मैं लडकी होता ।

यह ज़माना है उनका
सब कहीं आदर उनका
न 'रेशन' ढोना, न धक्का खाना
एक मुस्कान से सब कुछ पाना ।

सब की आँखों के ये तारे
हँसी खुशी के ये फुलवारे
पिता का शर्ट, जीन्स भैया का
क्या करे राम, इन की फैशन का ।

पन्द्रह साल तक फ्री एडूकेशन,
हर जगह उनको प्रिफरेंस
हर गाडी में लेडिस सीट
हर काऊँटर पर 'लेडिस फस्ट' ।

न पढने की ज़रूरत, न नौकरी की चिन्ता,
साल दो साल कालेज जाओ;
कैन्टीन जाओं, कूलबार जाओ
घूमो फिरो, मौज उडाओ ।

फिर क्या, शादी कर ली, मौज मना ली,
स्त्रीधन पा ली, पेनशन पा ली,
इतना होने पर भी
बम रूपी आँसू टपकाती ।

हे भगवान, तेरी यह सृष्टि कैसी ?
काश ! मैं लडकी होता ।

विद्यार्थीजीवन

—ABDUL REHIMAN

विद्यार्थीजीवन मानवजीवन का वसन्तकाल है। इस काल में मनुष्य जीवन की सभी समस्याओं से अलग रह कर विद्योपार्जन करता है। शिक्षा प्राप्त करने के इस काल में मनुष्य के मन में किसी दूसरी चिन्ता के लिए स्थान ही नहीं होता। वास्तव में यह काल मनुष्य के भविष्य का निर्माता है। क्योंकि एक मनुष्य के भावी जीवन की नींव विद्यार्थीजीवन में डाली जाती है। अर्थात यदि एक विद्यार्थी अच्छी तरह पढे तो भविष्य में वह एक महान व्यक्ति बन जाएगा। इस के बदले यदि वह बुरी आदतों का गुलाम बन कर शिक्षा से विमुख हो जाये तो उसका भविष्य अन्धकारमय हो जाएगा। अतः मनुष्यजीवन का एबसे महत्वपूर्ण काल विद्यार्थीजीवन ही है।

इस बात को सब से पहले विद्यार्थियों को समझना चाहिए और उन्हें अपने विद्यालयों के वातावरण को शान्त और पवित्र रखना चहिए। तभी अध्यापक बडे उत्साह से अपना कर्तव्य निभाएँगे। तभी विद्यार्थियों को अपने परिश्रम में सफलता मिलेगी। तभी माँ-बाप अपनी सन्तानों की प्रगति के लिए तरह तरह के त्याग खुशी से करने को तैयार हो जाएँगे।

एक देश का भविष्य उस देश के विद्यार्थियों के हाथों में रहता है। क्यों कि आज के विद्यार्थी ही कल के इन्जिनीयर, डाक्टर, वैज्ञानिक, अध्यापक, किसान और मजदूर हैं। यदि आज के विद्यार्थी अपने कर्तव्य का समुचित पालन करें, ठीक तरह से पढें तो देश का भविष्य उनके हाथों में सुरक्षित रहेगा। देश सभी क्षेत्रों में प्रगति करेगा।

इस देश मँ जितने महात व्यक्ति हुए हैं उनके विद्यार्थीजीवन के बारे में सोचिए। महात्मागाँधी जवाहरलाल नेहरू, डा० राजेन्द्रप्रसाद, डा० राधाकृष्णन, डा० ज़ाकीर हुसैन आदि महापुरुष बहुत ही अच्छे विद्यार्थी रहे थे। ऐसा कोई व्यक्ति महान नहीं बना जो अपने विद्यार्थी जीवन को बरबाद कर आया।

जो विद्यार्थी अपने कर्तव्य का पालन करता है, अपना उपकार करता है और अपने माँ-बाप तथा भाई बहनों का उपकार तरता है। इतना ही नहीं वह अपने प्रान्त और अपने राष्ट्र का उपकार करता है। इसलिए सरकार हर वर्ष करोडों रुपये शिक्षा क्षेत्र में खर्च करती है।

केवल किताबें पढना शिक्षा नहीं होती। स्नेह, सत्यव्रत, सहानुभूति, क्षमा, त्याग आदि पुनीत भावनाएँ विद्यार्थियों के मन में पैदा होनी हैं। 'जिओ और जीने दो' के सिद्धान्त का उन्हें अनुसरण करना चाहिए। अर्थात् उन्हें अच्छा जीवन बिताना सीखना है और साथ ही दूसरों को अच्छा जीवन बिताने में मदद देनी चाहिए। मतलब यह है कि विद्यार्थियों को अच्छा ज्ञान भी मिलना है और उनके हृदयों में मनुष्यता की उदात्त भावना भी पैदा होनी चाहिए। तभी विद्यार्थियों का कल्याण होगा, देश और समाज का भी।